

hätte man निष्कृति (vgl. Bed. 3) erwartet.

निष्कृति (wie eben) f. = निष्कृव ÇABDAR. im ÇKDr. *Läugnung, Verheimlichung* AMAR. 8.

निष्कृवन (wie eben) n. 1) = निष्कृव 1. GORR. 4, 4, 8. — 2) = निष्कृव 4. LĀTJ. 5, 6, 10.

निष्क्राद् (von क्र्वाद् mit नि) m. *Laut, Ton* AK. 1, 1, 6, 1 (v. l. निर्क्राद्). H. 1399. सारसैः कलनिष्क्रादिः RAGH. 1, 41. BHĀG. P. 7, 8, 17. — Vgl. das gebräuchlichere निर्क्राद्.

1. नी, नैयति und ०ते DHĀTUP. 22, 5. neben नयेत् ep. auch नयीत् MBH. 5, 1263. 1339. neben अनयत् ved. auch अनयीत्; अनैषीत्, अनेष्ट, ved. नैषत्. नैषति, नैषि, नैष्ट, नैषथ, नैष्ट (med.), नैष imper. aor. AV. 7, 97, 2. 12, 3, 16. नैषतु P. 3, 1, 34. Vārt. P. 3, 1, 85. Schol.; ved. अननीताम्, नीतीताम्; निनाय, निन्यतुम्, निन्युम् (P. 6, 4, 82), नीनिम् TS. 3, 2, 8, 3, wo aber das Metrum निनीम् fordert; ved. निनीयात्, निनीयस्; ep. नयामास; निन्ये; नैष्यामि; ep. auch नयिष्यामि, ०न्ये; नेता, ep. auch नयिता; नेतुम्, ep. (auch Ait. Br.) auch नयितुम्; नीत्वा, ०नीय; pass. नीयते, नीत. 1) *leiten, führen, lenken*: सुनीति-निर्नयसि त्रायसे जनेम् RV. 2, 23, 4. ऋतु नैषति 5, 46, 1. यज्ञं नय साधु 6, 15, 16. रथे तिष्ठन्नयति वज्रिनः पुरः 6, 75, 6. 7, 77, 3. अरुम्पो अनयं वावशानाः 4, 26, 2. विशाः 6, 1, 7. 10, 75, 4. नीथानि Ait. Br. 2, 38. ÇAT. Br. 13, 2, 8, 1. अज्ञः पुरो नीयेते RV. 1, 163, 12. सर्वात्रैष्यामि वः सदा । वज्रिनात्तारिष्यामि MBH. 1, 6052. गमनाय मतिं चक्रे ताश्चैनं निन्युरङ्गनाः R. 1, 9, 55. नयिष्यामि च वाक्निनीम् 5, 91, 24. RĀGA-TAR. 5, 218. चमूः । बलमुद्धैः सुनीता MBH. 2, 197. देवेन किल यस्यार्थः स नीतिः ऽपि विपद्यते 4, 612. अयं *Etwas* (gen.) *anführen*: धीती वा पे अनयन्वाचो अयम् AV. 7, 1, 1. अयं पृ-क्षस्यं ब्रूतो नयन्तीः RV. 6, 65, 2. अयं नयत्सुपद्यत्तारणाम् 3, 31, 6; vgl. अयणी. med.: अनयत् सिन्धून् RV. 4, 33, 7. तुरो न कर्म नयमान उक्था 4, 173, 9. 3, 7, 6. KĀND. UP. 6, 8, 3. vom Ross, *das den Wagen führt*: उद्गा न नावमनयत् धीराः RV. 5, 43, 10. क्रन्दद्द्यो नयमानो हवद्वाः 4, 173, 3. — 2) *abführen, wegführen, fortbringen, fortschaffen; hinführen, hinbringen, hinschaffen zu*: नयता बद्धमेतम् RV. 10, 34, 3. लोधां नयन्ति पशू मन्थमानाः 3, 53, 23. इतो नेता MBH. 3, 2613. न राम नेतुमर्हसि R. 1, 22, 4. नयन्ति मां वत्सकाशतः 54, 8. 3, 53, 53. fg. नेतुं गङ्गां स त्रिदिवं यौवा R. GORR. 1, 44, 24. कालं कालः नयिष्यति MBH. 5, 393. यद्यनीतासु दक्षिणासु कलशो दीर्यत ÇAT. Br. 4, 5, 40. 7. KĀTJ. ÇU. 25, 11, 7. 12, 26. Das Ziel a) im acc.: ग्राममज्ञा नयति SIDDH. K. zu P. 1, 4, 51. VOP. 5, 6. रत्नौ ऽधमे तमौ नयामि VS. 6, 16. AV. 9, 2, 17. सर्वे ऽपि क्रमशस्वेते — विप्रं नयन्ति पर-मो गतिम् M. 6, 88. MBH. 3, 5073. (ताम्) प्रकाय (= गृहीत्वा) दक्षिणे कस्ते निनाय शयनोत्तमम् HARIV. 8744. धर्मप्रधानं पुरुषम् — परलोकं नयत्याशु M. 4, 243. अविहंसासमलम् — प्रमदा क्षुत्पथं नेतुम् 2, 214. MBH. 1, 2971. SUND. 2, 20. R. 1, 42, 20. 3, 54, 10. KATHĀS. 9, 84, 26, 119. PAÑKĀT. 40, 22. 41, 15. ÇUK. 44, 15. 45, 8. BHATT. 6, 49. नयिष्यति त्वां स्वपुरीम् R. 3, 63, 14. MBH. 1, 5990. ध्रुवं तु भरतं रामः — देशात्तरं च नयिता देहात्तरमथापि वा R. GORR. 2, 7, 23. यत्ता क्रोः — उर्ध्वं रथं क्रूरिसकृद्युजं निनाय RAGH. 12, 103. तं प्रवक्ष्येन नीत्वा पुरम् DAÇAK. in BENF. Chr. 183, 4. पुरद्वारं श-कोटेन नयेत् (यष्टिम्) VARĀH. BRH. S. 42 (43), 21. आत्मानं शनैः सूक्ष्मं भग-वतो ब्रूयिष्या नयेत् BHĀG. P. 5, 26, 39. तम् — नेष्यते यमसादनम् MBH. 1, 1758. BHĀG. P. 7, 8, 6. 2, 2, 20. त्वां नये वत्प्रियतमम् DAÇAK. in BENF. Chr. 187, 3. — b) im dat.: नीयतां परलोकाय साधयं कुलपासनः MBH. 2, IV. Theil.

2480 = 7, 6310. न वा एतं मृत्यवे नयति यं यज्ञाय नयति ÇAT. Br. 3, 8, 1. 10. अये नय सुपथा राये अस्मान् BRH. ĀB. 5, 15. इममयं अयुषे नय AV. 2, 28, 15. तामु तस्मै नयामस्यश्चमिवाश्चाभिधान्या 5. 14. 6. अग्निं दक्षिणां न-यति ÇAT. Br. 3, 6, 1, 29. TS. 6, 1, 8, 8. KĀTJ. ÇU. 12, 2, 18. TBa. 2, 2, 8, 1. — c) im loc.: रामलक्ष्मणयोर्मध्ये नेष्यामो जनकात्मज्ञाम् R. 5, 58, 21. नेतुं वा-ञ्छति यः सतां पथि खलान्मूक्तैः सुधास्यन्दिभिः BHART. 2, 6. गृह्मण्ये नीतः VET. in LA. 22, 19. यावद्दध्यस्थाने नीयते 27, 5. विन्ध्यद्रो नीता 37, 8. उ-रसि तं (अनिलं) नयेत् BHĀG. P. 2, 2, 20. अहं त्वां तत्र नीत्वा HIT. 21, 9. 26, 22. गेह्मेनो नयत्येव नरानिह VĪD. 200. देवैकैत्र नीतानाम् BHĀG. P. 7, 2, 21. — 3) med. *mit sich führen, mit sich nehmen* (als Sieger, Eigen- thümer, Machthaber): यातुधानस्य प्रज्ञा नयस्व AV. 1, 8, 3. अरुर्कर्णय-मानो गामश्चं पुरुषं जगत् TAITT. ĀB. 6, 5, 3. विक्रितीं मध्यमं मन्ये राजपुत्र नयस्व माम् R. 1, 61, 20 (63, 23 GORR.). 34, 10. MBH. 1, 679. 4000. 3, 9907. HARIV. 6342. 7654. R. 2, 27, 22. 31, 8. R. GORR. 2, 30, 33. (मो यदि) नयेत् स्वपुरो रामः 5, 35, 47. अयं सत्यमेव निवर्तनम् तन्मामपि नेतुमर्हसि VĪR. 82, 20. पुस्तकानि नीत्वा प्रचलिताः PAÑKĀT. 245, 1. त्वं हि भीष्मेण निर्जि-त्य नीता प्रीतिमती तदा *heimgeführt* (als Weib) MBH. 5, 5982. 5990. 7054. 7056. DRAUP. 5, 26. Ausnahmsweise act.: अथ मामेवमव्ययो वनं न चेन्नयिष्यसि R. 2, 30, 19. नय माम् R. GORR. 2, 30, 25. नराङ्गेन्द्रोद्भूतप्रति-दिवसमाकृष्य नयतः कृतात्तात् ÇĀNTIÇ. 3, 5. — 4) *Jmd oder Etwas in ein Verhältniss, eine Lage, einen Zustand* (acc.) *bringen, — versetzen*: वशम् *in seine Gewalt bringen*: न मित्रं नयेत् वशम् AV. 5, 19, 15. RV. 10, 84, 3. अनयत् — वशमेको नृपतीन् RAGH. 8, 19. आधानम्, विक्रयम् *als Pfand geben, verkaufen* JĀG. 2, 247. दुःखम् *in Schmerz versetzen* SPR. 583. प्रसादम् BHART. 3, 62. संरम्भम् RAGH. 12, 36. अतिवृद्धिम् ad ÇAK. 54. RĀ-GA-TAR. 5, 77. विनाशम् VARĀH. BRH. S. 42 (43), 7. नयम् PRAB. 2, 12. BHATT. 9, 22. 13, 10, 82. 113. शमम् SPR. 374. प्रशमम् PAÑKĀT. 1, 264. परितोषम् 34, 12. fg. पुष्टिम् 253, 11. व्रीडाम् RĀGA-TAR. 5, 338. उच्छ्रायम् KIR. 5, 31. विकृतिम् BHATT. 3, 7. अवलिमानम् KĀND. UP. 8, 6, 4. न तं नयेत् साद्यम् *als Zeugen zu- lassen* M. 8, 197. द्यत्तरताम् RV. PRĪT. 14, 15. प्रूढताम् M. 3, 15. समताम् 8, 178. 9, 218. R. 2, 33, 9. MEGH. 62. 66. MĀLAY. 73. RĀGA-TAR. 5, 16. 144. 354. PAÑKĀT. 34, 11. 78, 15. 97, 14. PRAB. 13, 7. KIR. 5, 19. BHATT. 5, 15. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 26. ÇI. 10. mit dem loc. eines nom. abstr.: दुहित्वे *zur Tochter machen* R. 1, 44, 38. भस्मसात् *in Asche verwandeln* PAÑKĀT. 38, 18. — 5) दण्डम् *den Stock führen, — tragen* so v. a. *Strafe verhängen*: सो (दण्डः) ऽसकृद्येन मूढेन लुब्धेन — न शक्यो न्यायतो नेतुम् M. 7, 30. JĀG. 1, 354. SPR. 473. — 6) *hintragen, wegstragen*. *forttragen, hintragen zu* MBH. 3, 11008. सर्वः प्रैष्यजनस्तत्र रत्नानि वि-विधानि च — निनाय R. GORR. 2, 83, 22. सपर्वतवनोद्देशाम् — लङ्कामपि स-नागाश्चो नयितुं शक्तिरस्ति मे 5, 35, 35. ज्ञानामि गमने शक्तिं नयितुं मां च ते कपे 40. आरुहेमां मम श्रेणिं नेष्यामि त्वां विक्रायसा MBH. 1, 5966. VĪD. 280. शिवेन नय (अश्वा) मां पथा 31. 37. 28. नयस्व — त्वं मां तस्या निवेश-नम् MĀRK. P. 16, 19. तं तथा नीयमानमवलोक्य PAÑKĀT. 76, 24. 25. भूयो ऽपि प्रयेजने संज्ञाते तन्मात्रं समेत्यास्मात्स्थानात्रेष्यावः 96. 6. उक्त्यालिञ्जरात्-स्मात् — तं मत्स्यमनयद्वापोम् MATSJO. 14. 18. 20. 22. fg. तहृस्थलं (पि-पीलिकाः) नयन्ति (अण्डकानि) निम्नात् VARĀH. BRH. S. 94, 59. भद्रं न सर्व-मेतद्विदं गृहं प्रति नेतुं युज्यते PAÑKĀT. 96, 4. कस्येदमुशीरानुलेपनं मृणालवन्ति च नलिनीपत्राणि नीयन्ते *für wen* ÇAK. 31, 7. कस्येदं नीयते तोयम् VĪD. 289.